श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

श्री शत्रुंजय-मुक्ति
सा विद्या या विमुक्तये
सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

C/o. शाह गोविन्दजी वीरम फेक्टरी कम्पाउन्ड, मोंढा रोड, औरंगाबाद (महा.) ४३१ ००१

सम्यग्ज्ञान प्रवेशिका जनवरी - २०२०

◆◆◆ अभ्यासक्रम जवाब पत्र ◆◆◆

ऐनरोलमेन्ट नंबर | 6 | शहर ____________

विद्यार्थी का नाम ____________

प्रश्न-१ रिक्त स्थान

(१)	न्याय
(२)	आत्म रमणता
(३)	विशाल
(४)	सत्कथाओ
(५)	वासिष्ठ
(६)	अजिन
(७)	गुरु
(८)	अगुल
(९)	धर्मभ्रष्ट
(१०)	सचित्त-अचित्त
(११)	अधिक
(१२)	पुण्य
(१३)	शुद्धि
(१४)	कर्म
(१५)	नाम कर्म
(१६)	रत्न
(१७)	कफ
(१८)	सर्प
(१९)	देवलोक
(२०)	व्दादशा

प्रश्न-२ एक ही शब्द में

(१)	भोजन इच्छा
(२)	अन्य लिंग
(३)	त्याग
(४)	सुपक्ष
(५)	गुणानुरागी
(६)	तप
(७)	जमाली
(८)	अढाई
(९)	राग
(१०)	अन्तर्मुहूर्त
(११)	रोहिणी
(१२)	गुरुबुद्धि
(१३)	परलोक
(१४)	चमरेन्द्र
(१५)	स्थितिबंध
(१६)	साधु
(१७)	पात्रों को
(१८)	तप
(१९)	ललाट से
(२०)	आठ

(५) अनुक्रम से, (६) संग्रह, (७) युवत, (८) रसत्याग, (९) गोत्र, (१०) मुक्त, (११) विनय, (१२) राज कथा, (१३) योनि, (१४) मैं, (१५) कुम्भार

प्रश्न-३ शब्दार्थ

(१)	सूक्ष्म
(२)	वासित
(३)	पद्रह
(४)	रत्नप्रभा

प्रश्न-४ जोडियाँ लगाओ

(१)	4	(६)	9
(२)	6	(७)	२
(३)	7	(८)	7
(४)	8	(९)	1
(५)	3	(१०)	5

प्रश्न-५ संख्या में जवाब

(१)	६
(२)	३३
(३)	४
(४)	२
(५)	१४
(६)	३६
(७)	५६
(८)	१५
(९)	२८
(१०)	१८

	प्रश्न-६ ✓ या ×		प्रश्न-७ यह वाक्य किस पृष्ठ पर
(१)	×	(१)	१७
(२)	✓	(२)	२३
(३)	×	(३)	८
(४)	×	(४)	४
(५)	×	(५)	१४
(६)	✓	(६)	२१
(७)	✓	(७)	१८
(८)	×	(८)	५
(९)	✓	(९)	२
(१०)	×	(१०)	६

प्रश्न-१ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-२ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-३ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-४ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-५ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-६ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-७ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-८ मिले हुए गुण	=	कुल गुण

जांचनेवाले की सही ____________

रीमार्क ____________

प्रश्न - ८

१. कर्म का आत्मा को एकमेक होकर चिपकना बंध कहलाता है। रसबंध भी एक प्रकार का बंध है। मोदक मे मिठास होने से वे मिठे कहलाते है। फिर भी प्रत्येक मोदक की मिठास भिन्न होती है, जैसे मेथी के मोदक मिठे होने पश्चात भी कडवे होते है। असी तरह आत्मा के साथ जो भी कर्म जुडते है, उनमें भी, शुभ अशुभ कर्म के रस मे भी भिन्नता होती है। कर्म बंधन के समय रस में मंदता, तीव्रता, तीव्रतरता, तीव्रतमता इ. देखने मिलती है जिसे रसबंध कहते है।

२. राजकथा ४ विकथाओं में से एक है। जब विकथा राजा संबंधी हो, जैसे की हमारा राजा लडने में असमर्थ है/उसे मारना चाहिए/वह जीतना चाहिए/दो राजाओं का युद्ध हुआ वह अच्छा हुआ/इस राजा का यही हाल होना चाहिए/ राजा राज चलाना नही जानता/ राजा दुष्ट है जल्दी मर जाए तो अच्छा/ यह राजा अच्छा है, अत: लंबे समय तक राज करे तो बेहत्तर इ. इ. कहना जिससे राजा के संदर्भ में प्रशंसा/ निंदा हो असे राजकथा कहते है।

३. गुरुक्षमापनासूत्र अर्थात अब्भुट्ठिओ में गुरु के प्रति हुए अविनय अपराध की क्षमा ली जाती है। दुष्कृत्य जैसे की अप्रीतिभाव उपजाना, भोजन पानी विनय गुरुसेवा एक बार/ बार बार बोलना आदि संबंधी, गुरु से ऊंचे आसन पर बैठने, समान आसन बैठने संबंधी, गुरु के बोलते हुए बिचमें बोलना, कही हुई बात को विशेष रूप से कहना संबंधी, जो कोई विनयहीनता हो, दुष्कृत्य हो वह सब मिथ्या हो जाए यह बिनती करना फिर खमासणा देकर पचक्खाण लेकर सुखशाता पुछते है।

४. निम्न छह अतिशय है जो वार्षिक दान में प्रस्थापित होते है। प्रथम → सौधर्मेन्द्र तीर्थंकर के हाथ में स्थापित करता है, इशानेन्द्र सुवर्ण छडी हाथ में रखकर देवों को दान लेते हुए अटकाता है, मनुष्य ललाट में जितना हो उतना ही वह माँगे ऐसी प्रवृत्ती रखता है, चमरेंद्र खडा रहकर तीर्थंकर के हाथ में कम या ज्यादा सोनामहोर न आये ऐसी व्यवस्था करते है, भवनपति देव अन्य क्षेत्र के मनुष्यों को दान लेकर लेने आते है और वाणव्यंतर उनको वापिस छोडकर आते है। ज्योतिषी विद्याधरों को दान के समाचार देते है।

५. नारकी के जिवों की उंचाई धनुष्य के नाप से नापी जाती है। सर्वोत्तम उंचाई सातमी नर्क के जीवों की होती है जो ५०० धनुष है, उंचेतम से नीचे जाते जाते उंचाई आधी होती है। अत: ऊँचाई है— 7वी नारकी → 500 धनुष, छट्ठी नारकी → 250 धनुष, 5वी नारकी → 125 धनुष, चौथी नरकी → 62 धनुष, तिसरी नारकी → 31 धनुष्य, दुसरी नरक → 15 धनुष्य 2 हाथ और 12 अंगुल और पहली नरक → 7 धनुष्य 3 हात और 6 अंगुल।